अ रीयल हीरो

श्री राजीव दीक्षित

अ रीयल हीरो

श्री राजीव दीक्षित

प्रकाशन तिथि - दिसंबर २०१८,

साहित्य चिंतन

विषय - सूची

प्रस्तावना

संक्षिप्त परिचय

जीवन परिचय

श्री राजीव दीक्षित जी के व्याख्यान

श्री राजीव दीक्षित जी की किताबें

श्री राजीव दीक्षित जी के अनमोल विचार

समापन

प्रस्तावना

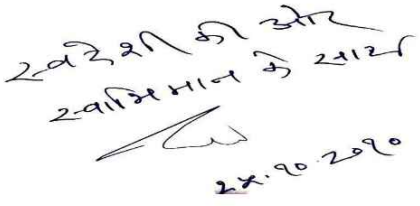

Handwriting of
Sri Rajiv Dixit ji
signed on 25.10.10
in Kolkata

श्री राजीव दीक्षित जी के बारे में कुछ लिखना या बोलना सूरज को रौशनी दिखने जैसा है। वो ज्ञान के अथाह भण्डार थे। राजीव दीक्षित जी भारत माँ के सच्चे सपूत थे। वे सिर्फ राष्ट्र कल्याण, स्वदेशी और आयुर्वेदिक चिकित्सा शैली को महत्व देते थे। राजीव दीक्षित जी ने अपने व्याख्यानों से पूरे देश में स्वदेशी आन्दोलन की अलख जगाई थी। वे भारत में व्यवसाय कर रही विदेशी कंपनियों के पुरजोर विरोधक थे और कई कंपनियों को देश से बाहर भी निकाला। उन्होंने इन कंपनियों की लूट का खुलासा करते हुए बताया था कि किस तरह विदेशी कंपनियाँ भारत को अंदरूनी रुप से खोखला कर रही हैं। राजीव दीक्षित जी एक प्रखर वक्ता और निडर स्वभाव के थे। वे नेताओ की असलियत लोगों को बताते थे। वो स्वदेशी भावना के एक ज्वलंत

प्रेरणा पुंज थे। अंग्रेजी कानून जिनके जरिये हमे गुलाम रखा जा रहा है, गाय का महत्व, आयुर्वेद, यूरोपियन सभ्यता आदि विषय पर उन्होंने कई अद्भुत व्याख्यान दिए।

इस किताब में संक्षिप्त रूप में उनकी जीवनी है, अगर हम आज के युवाओं की भाषा में कहें कि वो एक चलते फिरते सुपर कंप्यूटर थे, तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नही होगी, ये किताब इसलिए लिखी जा रही है जिससे सभी लोगों को पता चल सके कि राजीव जी के अनुसार सच में हमारे भारत देश की क्या मान्यताएं हैं। हमारी संस्कृति क्या है, हमारा देश किस तरफ जा रहा है , कैसे यह कुछ हज़ार बहुराष्ट्रीय कंपनियों के कारण पाश्चात्य संस्कृति की तरफ झुकता जा रहा है और यह भी कि इसे बदलने, सुधारने के लिए उन्होने अपने आप को किस तरह बलिदान कर दिया।

श्री राजीव दीक्षित जी एक उत्कृष्ट वक्ता, वैज्ञानिक, वैद्य (आयुर्वेद और होम्योपैथिक), अर्थशास्त्री थे। उनकी वाणी में इतना बल था कि जो उन्हे एक बार कोई सुन ले वो उनके साथ चल देता था। उन्होने पूरे देश में घूमकर हजारों व्याख्यान दिए और ऐसी ऐसी जानकारियाँ दी जो हमे उनसे पहले नही पता थी। वो बहुत ज्ञानी पुरुष थे, उनके बारे में जितना लिखें उतना कम है। किताब का अधिकांश हिस्सा इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री से लिया गया है, उन्होंने स्वदेशी आंदोलन, आजादी बचाओ आंदोलन और विभिन्न अन्य कार्यों के माध्यम से भारतीय राष्ट्रीय हित के विषयों पर जागरूकता फैलाने के लिए सामाजिक आंदोलन शुरू किया। उन्होंने भारत स्वाभिमान आंदोलन के राष्ट्रीय सचिव के रूप में कार्य किया, वह भारत स्वाभिमान आंदोलन के संस्थापक थे। अपने जीवन में वह चंद्रशेखर आज़ाद, भगत सिंह, उधम सिंह जैसे भारतीय क्रांतिकारियों की विचारधारा से प्रभावित थे। वह सीएसआईआर (विज्ञान और औद्योगिक अनुसंधान परिषद) में डॉक्टरेट और वैज्ञानिक थे, लेकिन उन्होंने अपने नाम के आगे डॉ का इस्तेमाल कभी नहीं

किया। वह केवल स्वदेशी उत्पादों के उपयोग पर विश्वास रखते और उनके प्रचारक थे। उन्होंने भारतीय इतिहास और आर्थिक नीतियों के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए भी काम किया था। उन्होंने हमारी संस्कृति में गाय का महत्व समझाया और उसका आर्थिक मूल्यांकन करके ये भी सिद्ध किया कि किस तरह इसे मारने की जगह बचाने में ज्यादा फायदा है।

संक्षिप्त परिचय

- नाम - राजीव दीक्षित
- जन्म - ३० नवंबर, १९६७
- जन्म स्थल – गाँव : नाह, जिला : अलीगढ़, उत्तरप्रदेश
- पिता का नाम - राधेश्याम दीक्षित (बी.टी.ओ. ऑफिसर)
- माता का नाम - मिथिलेश कुमारी दीक्षित
- भाई - प्रदीप दीक्षित
- बहन - लता शर्मा
- काम - उत्कृष्ट वक्ता, सामाजिक कार्यकर्ता, वैज्ञानिक, वैद्य, अर्थशास्त्री
- शिक्षा - बी. टेक, एम. टेक
- प्रमुख उपलब्धियाँ - आज़ादी बचाओ आंदोलन और स्वदेशी आंदोलन के सूत्रधार, २० वर्षों में ५००० से ज्यादा व्याख्यान
- मृत्यु - ३० नवंबर २०१० (४३ वर्ष)
- मृत्यु स्थल - भिलाई, छत्तीसगढ़

- पत्नी - शादी नही की, आजीवन ब्रह्मचारी (देश की सेवा के लिए)

जीवन परिचय

राजीव दीक्षित जी के परिचय मे जितनी बातें कही जाए वो सभी कम है! इतने विराट व्यक्तित्व को कुछ चंद शब्दो में बयान कर पाना असंभव है! उनको पूर्ण रूप से जानना है तो आपको उनके व्याख्यानों को सुनना पड़ेगा।

राजीव दीक्षित जी का जन्म ३० नवम्बर १९६७ को उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के नाह गाँव में पिता राधेश्याम दीक्षित एवं माता मिथिलेश कुमारी के यहाँ हुआ था। बचपन से ही राजीव भाई को देश की समस्याओं को जानने की गहरी रुचि थी। उनका मैगजीनों और सभी प्रकार के अखबारो को पढने में प्रति माह उस समय ८०० रूपये का खर्च आता था। वे अभी नौवीं कक्षा मे ही थे कि उन्होने अपने इतिहास के अध्यापक से एक ऐसा सवाल पूछा जिसका जवाब उस अध्यापक के पास भी नही था जैसा कि आप जानते है कि हमको इतिहास की किताबों मे पढाया जाता है कि अंग्रेजो का भारत के राजा से प्रथम युद्ध १७५७ मे पलासी के मैदान मे रोबर्ट क्लाइव और बंगाल के नवाब सिराजुद्दोला से हुआ था। उस युद्ध मे रोबर्ट क्लाइव ने सिराजुद्दोला को हराया था और उसके बाद भारत गुलाम हो गया था। राजीव भाई ने अपने इतिहास के अध्यापक से पूछा कि सर मुझे ये बताइए कि प्लासी के युद्ध में अंग्रेजो की तरफ से लड़ने वाले कितने सिपाही थे, तो अध्यापक कहते थे कि 'मुझको नही मालूम' राजीव भाई ने पूछा 'क्यों नहीं मालूम' तो कहते थे कि - मुझे किसी ने नही पढाया तो मै तुमको

कहाँ से पढा दूँ? तब राजीव भाई ने उनको बराबर एक ही सवाल पूछा कि 'सर आप जरा ये बताईये कि बिना सिपाही के कोई युद्ध हो सकता है' तो अध्यापक ने कहा 'नही' तो फिर राजीव भाई ने पूछा फिर हमको ये क्यों नहीं पढाया जाता कि युद्ध में कितने सिपाही थे अंग्रेजो की तरफ से? और दूसरी तरफ एक और सवाल राजीव भाई ने पूछा था कि अच्छा ये बताईये कि अंग्रेजो के पास कितने? खैर इस सवाल का जवाब बहुत बडा और गंभीर है कि आखिर इतना बडा भारत मुठ्ठी भर अंग्रेजों का गुलाम कैसे हो गया? इसका जवाब आपको राजीव भाई के एक व्याख्यान जिसका नाम 'आजादी का असली इतिहास' मे मिल जाएगा। देश की आजादी से जुडे ऐसे सैंकडों - सैंकडों सवाल दिन रात राजीव भाई के दिमाग मे घूमते रहते थे। उनके पिताजी बी. टी. ओ. ऑफिसर (ब्रिज एंड टनल - पुल और सुरंग अधिकारी) थे। उनके दादा और दादी ने आजादी की लड़ाई में अपना योगदान दिया था।

श्री राजीव दीक्षित जी ने अपनी प्राथमिक शिक्षा अपने गांव से ही पूरी की। उसके बाद पी.डी. जैन इंटर कॉलेज फिरोजाबाद से उन्होंने १२वीं कक्षा तक की शिक्षा प्राप्त की। उसके बाद आगे की पढाई के लिए इलाहाबाद गए। वे इलेक्ट्रॉनिक्स और टेलीकम्यूनिकेशन में उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते थे। वर्ष १९८४ में यहाँ आकर जे. के. इंस्टिट्यूट ऑफ़ अप्लाइड फिजिक्स एंड टेक्नोलॉजी में पढाई करने लगे। इसी वर्ष ३ दिसम्बर की रात को भोपाल गैस कांड हुआ जिसमें लगभग २२००० लोग मौत की नींद सो गए। उनमें से पीड़ित कुछ लोगों से राजीव जी मिले, उनकी पीड़ा देखकर और उन्हें न्याय दिलाने के लिए यूनियन कार्बाइड कंपनी (भोपाल) को देश से भगाने के काम में लग गए। इस कांड से वे इतने परेशान हुए कि उनकी बी. टेक. की पढाई बीच में ही छूट गई। तब राजीव भाई ने इसके पीछे के षड्यंत्र का पता लगाया और ये खुलासा किया कि ये कोई घटना नहीं थी बल्कि अमेरिका द्वारा किया गया एक परीक्षण था।

इसी दौरान अपने शोध कार्य के लिए वे एम्स्टर्डम(हॉलैंड) की यात्रा पर गए। वहाँ उन्होंने अपना शोध को पढ़ना पढ़ा। तभी एक डच वैज्ञानिक

ने कहा कि आप अपना शोध कार्य हिंदी में क्यों नही पढ़ रहे? आपसे पहले जितने भी वैज्ञानिक आए सबने अपना शोध कार्य अपनी अपनी मातृभाषा में पढ़ा। इसके साथ ही उस वैज्ञानिक ने यह भी कहा, अगर आप कुछ मौलिक शोध करना चाहते हैं तो आपको अपनी मातृभाषा में ही करना चाहिए। अगर आप किसी दूसरी भाषा में करते हैं तो आप मौलिक शोध नही कर पाएँगे, सिर्फ नकल करेंगे। इस घटना का राजीव जी पर गहरा प्रभाव पड़ा और उन्होंने इस पर गहन चिंतन किया। वो सोचने लगे जब सभी देश अपनी - अपनी मातृभाषा में उच्च शिक्षा देते हैं तो भारत में अंग्रेजी भाषा में क्यों शिक्षा दी जा रही हैं? जब वे हॉलैंड से वापस भारत लौटे तो उन्होंने भारत को स्वदेशी रूप से मजबूत और संपन्न बनाने का लक्ष्य बनाया।

इसके बाद १९९१ में उन्होंने आजादी बचाओ आन्दोलन और स्वदेशी आन्दोलन की शुरुआत की। इस आन्दोलन ने यूनियन कार्बाइड, कारगिल और ड्यूपोंट जैसी कई बड़ी कंपनियों को भारत से भगाया था। ऐसे ही आर्थर डंकल नाम का एक अधिकारी जिसने डंकल ड्राफ्ट बनाया था भारत मे लागू करवाने के लिए वो एक बार भारत आया तो राजीव भाई और बाकी कार्यकर्ता, जो कि बहुत गुस्से मे थे तब राजीव भाई ने उसे एयरपोर्ट पर ही जूतों से सबके सामने मार मार कर भगाया और इसी कारण उन्हें तिहाड़ जेल भी जाना पड़ा। उन्होने दो अमेरिकन कम्पनियाँ पेप्सी और कोकाकोला के खिलाफ प्रदर्शन किया और लोगों को बताया कि ये दोनों कम्पनियाँ पेय पदार्थ के नाम पर हम सबको जहर बेच रही है, हजारों करोड़ की लूट इस देश मे कर रही है और हमारा स्वास्थ बिगाड रही है। राजीव भाई ने लोगों से कोक, पेप्सी और इसका विज्ञापन करने वाले क्रिकेट खिलाडियो और फिल्मी स्टारों का बहिष्कार करने को कहा।

उन्होनें राजस्थान के कुछ गांववासियों के साथ मिलकर एक शराब बनाने वाली कंपनी जिसको सरकार ने लाइसेन्स दिया था और वो कंपनी रोज जमीन की नीचे बहुत अधिक मात्रा मे पानी निकाल कर शराब बनाने वाली थी, उस कंपनी को भगाया। इसी तरह उन्होंने

उत्तराखंड के टेहरी बाँध के बनने के खिलाफ ऐतिहासिक मोर्चे में भाग लिया और पुलिस लाठी चार्ज में काफी चोटें भी खाईं। टेहरी पुलिस ने राजीव जी को मारने की योजना भी बना ली थी। घायल होने के बाद भी उनका संघर्ष जारी रहा। लेकिन अंत में सरकार ने बलपूर्वक बाँध बनवाया। इसी बीच उनकी मुलाकात प्रोफेसर धर्मपाल नाम के एक इतिहासकार से हुई, उनसे मिलकर राजीव जी के जीवन में एक नया मोड़ आया। धर्मपाल जी को राजीव भाई अपना गुरु भी मानते थे, उन्होने राजीव भाई के काफी सवालों का जवाब ढूंढने मे उनकी मदद की! उन्होने राजीव भाई को भारत के बारे मे वो दस्तावेज उपलब्ध करवाए जो इंग्लैंड की लाइब्रेरी 'हाउस आफ कामन्स' मे रखे हुए थे जिनमें अंग्रेजों ने पूरा वर्णन किया था कि कैसे उन्होने भारत को गुलाम बनाया। राजीव भाई ने उन सब दस्तावेजों का अध्ययन किया और ये जानकर उनके रोंगटे खड़े हो गए कि भारत के लोगों को भारत के बारे मे कितना गलत इतिहास पढाया जा रहा है। फिर सच्चाई को लोगों के सामने लाने के लिए राजीव भाई गाँव, गाँव शहर शहर जाकर व्याख्यान देने लगे और साथ - साथ देश की आजादी और देश की अन्य गंभीर समस्याओं का इतिहास और उसका समाधान तलाशने में लग गए। तब राजीव भाई को देश की आजादी के विषय में बहुत ही गंभीर जानकारी प्राप्त हुई कि १५ अगस्त १९४७ को देश में कोई आजादी नही आई! बल्कि १४ अगस्त १९४७ की रात को अंग्रेज माउंट बेटन और नेहरू के बीच के समझौता हुआ था जिसे सत्ता का हस्तांतरण (ट्रांसफर ऑफ़ पॉवर एग्रीमेंट) कहते हैं। इस समझौते के अनुसार अंग्रेज अपनी कुर्सी नेहरू को देकर जाएँगे लेकिन उनके द्वारा भारत को बर्बाद करने के लिए बनाए गये ३४७३५ कानून वैसे ही इस देश मे चलेंगे और क्योंकि आजादी की लड़ाई मे पूरे देश का विरोध अँग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ था तो सिर्फ एक ईस्ट इंडिया कंपनी भारत छोड़ कर जाएगी और उसके साथ जो १२६ कंपनियाँ और जो भारत को लूटने आई थी वो वैसे की वैसे ही भारत में व्यापार करेंगी, लूटती रहेंगी! आज उन विदेशी कंपनियों की संख्या बढ़कर ६००० से ज्यादा हो गई हैं! एक बात जो राजीव भाई को हमेशा परेशान करती रहती थी कि आजादी के बाद भी अगर भारत में अँग्रेजी कानून वैसे के

वैसे ही चलेंगे और आजादी के बाद भी विदेशी कंपनियाँ भारत को वैसे ही लूटेंगी जैसे आजादी से पहले ईस्ट इंडिया कंपनी लूटा करती थी! आजादी के बाद भी भारत में वैसे ही गौ ह्त्या होगी रहेगी जैसे अंग्रेजों के समय होती थी।

राजीव जी ने स्विस बैंक से कालेधन को वापस लेन के लिए भी काफी प्रयास किया, उन्होंने कहा विदेश में जमा कालेधन को राष्ट्रीय संपत्ति घोषित कर दिया जाना चाहिए। ऐसा कई देश पहले कर चुके हैं जैसे नेपाल, अमेरिका, फिलीपीन्स, ज़ैरे, पाकिस्तान आदि। इसी दौरान राजीव जी ने हस्ताक्षर अभियान चलाया। वो एक करोड़ हस्ताक्षर लेकर कालेधन को देश की राष्ट्रीय संपत्ति घोषित करके वापस लाने के लिए संसद में कानून बनाने के लिए दबाव डालना चाहते थे। वे साठ लाख हस्ताक्षर लेने में सफल भी हुए थे और उनका कहना था अगर यहाँ ये कानून नहीं बना तो वो सुप्रीम कोर्ट जाएँगे। इसके बाद उन्होंने आज़ादी बचाओ आंदोलन की ओर से दिल्ली हाई कोर्ट में एक जनहित याचिका दायर की और कहा डबल टेक्सेशन जैसे लूट के कानून ख़त्म होने चाहिए। दिल्ली हाई कोर्ट ने फैसला आज़ादी बचाओ आंदोलन के पक्ष में सुनाया, जिससे उनकी जीत हुई, लेकिन २००३ में यूनियन ऑफ़ इंडिया ने इसी फैसले को सुप्रीम कोर्ट ले गए। सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली हाई कोर्ट के फैसले को ठुकराते हुए आज़ादी बचाओ आंदोलन के विषय को ख़ारिज कर दिया, यह जानते हुए कि डबल टेक्स एग्रीमेंट में नागरिकों को लूटा जा रहा था। सुप्रीम कोर्ट के ऐसे अन्यायपूर्ण फैसले से पता चलता है कि राजीव जी क्यों कहा करते थे कि अंग्रेजों के बनाए हुए कानून से हमें कभी भी न्याय नही मिलेगा। राजीव जी की लोकप्रियता देखकर उनके साथी ही उनसे ईर्ष्या करने लगे। इस पर वो कहते थे अगर मैं गलत हूँ तो लोग खुद इसका निर्णय करें, लेकिन इसका परिणाम उल्टा हुआ, वो देशवासियों के बीच और ज्यादा लोकप्रिय हो गए। राजीव जी का कहना था कि उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण का षड्यंत्र चलाकर भारत को लूटा जा रहा है। उन्होंने फॉरेन डायरेक्ट इन्वेस्टमेंट, जी. एम. फ़ूड और बी. टी. कॉटन का भी जोर शोर से विरोध किया। उनका कहना था

कि सरकार और किसान कृषि पर ध्यान नहीं दे रहे। इसी कारण कई किसान आत्महत्या करने पर मजबूर हो जाते हैं।

सन १९९९ से राजीव जी के व्याख्यानों ने देशभक्तों के बीच जागरूकता पैदा की और उनके बताये रास्ते पर चलने लगे। सन १९९९ में राजीव जी प्रख्यात योग गुरु स्वामी रामदेव से मिले। राजीव जी ने योग गुरु रामदेव के योग, प्राणायाम को सराहा और उनके सम्पर्क में रहते थे। राजीव जी और रामदेव के मिलने के बाद उन्होंने देश को स्वावलंबी, स्वदेशी और अंग्रेजों के कानून हटाने के लिए योजना बनाई। अनेक योजना के बाद ९ जनवरी २००९ में दोनों ने मिलकर 'भारत स्वाभिमान' नामक संगठन का निर्माण किया। इस संगठन में रामदेव ने राजीव जी को राष्ट्रिय सचिव का पद दिया गया। राजीव जी ने इसी दौरान सारे राजनैतिक दाँव पेंच रामदेव को बताये। उनके व्याख्यानों को सुनकर रामदेव इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने पतंजलि योगपीठ में ही उनके कई व्याख्यान करवाए।

१ अप्रेल २००९ में भारत स्वाभिमान का उद्घाटन हुआ जिसे आस्था टीवी पर सीधे प्रसारित किया गया। राजीव जी ने २० मिनट में कुछ ऐसी अद्भुत जानकारियाँ दी जिससे कि सारे देशभक्त राजीव जी के चाहने वाले बन गए। इसके बाद पतंजलि योगपीठ में राजीव जी ने रामदेव की उपस्थिति में कई व्याख्यान दिये। उन्होंने बताया कैसे आई. टी. सी. जो कि एक अमेरिकी कंपनी है, सिगरेट बनाने के लिए १ साल में १४ लाख पेड़ काट देती है और सरकार ने उसे खुली छूट दे रखी है। इसके अलावा वो 'राइट तो रिकॉल' अर्थात वापस बुलाने का कानून बनवाना चाहते थे क्यूंकि प्रजातंत्र को बचाने का ये एकमात्र तरीका है। उन्होंने कहा भारत को चलाने के लिए हमे किसी राजनैतिक पार्टी की जरूरत नहीं है। उन्होंने नार्को टेस्ट की भी मांग की। राजीव भाई कहते थे कि एक अंग्रेज मैकॉले ने जब भारत का शिक्षा तंत्र का कानून बनाया और शिक्षा का पाठ्यक्रम तैयार किया तब उसने एक बात कही कि मैंने भारत का शिक्षा तंत्र ऐसा बनाया है कि इसमे पढ़ के निकलने वाला व्यक्ति शक्ल से तो भारतीय होगा पर अक्ल से पूरा

अंग्रेज होगा, उसकी आत्मा अंगेजों जैसी होगी, उसको भारत की हर चीज में पिछडापन दिखाई देगा और उसको अंग्रेज और अंग्रेजियत ही सबसे बढियाँ लगेगी। इसके इलावा राजीव भाई का कहना था कि इसी अंग्रेज मैकॉले ने भारत की न्याय व्यवस्था को तोड़कर आई. पी. सी. , सी. पी. सी. जैसे कानून बनाये और उसके बाद बयान दिया की मैंने भारत की न्याय पद्धति को भी ऐसा बनाया है कि इससे किसी गरीब को इंसाफ नहीं मिलेगा। सालों साल मुकदमे लटकते रहेंगे। मुकदमों के सिर्फ फैंसले आएंगे, न्याय नही मिलेगा।

इस अंग्रेज शिक्षा पद्धति और अँग्रेजी न्यायव्यवस्था के खिलाफ लोगो को जागरूक करने के लिए राजीव राजीव भाई ने मैकॉले शिक्षा और भारत की प्राचीन गुरुकुल शिक्षा पर बहुत व्याख्यान दिये और इसके अतिरिक्त अपने एक मित्र, जो कि आजादी बचाओ आंदोलन के कार्यकर्ता थे - पवन गुप्ता जी के साथ मिल कर एक गुरुकुल की स्थापना की वहाँ वो फेल हुए बच्चों को ही दाखिला देते थे। कुछ वर्ष उन बच्चों को उन्होने प्राचीन शिक्षा पद्धति से पढाया और बच्चे बाद में इतने ज्ञानी हो गए कि आधुनिक शिक्षा में पढ़े बडे बडे वैज्ञानिक उनके आगे दाँतों तले उंगली दबाते थे। उन्होने देश भर में घूम घूम कर अलग अलग जगह पर व्याख्यान कर लोगों को गौ माता की महत्वता और उसका आर्थिक महत्व समझाया।

उन्होने ६० लाख से अधिक किसानों को देशी खेती (जीरो बजट नेचुरल फार्मिंग) करने के सूत्र बताये कि कैसे किसान रासायनिक खाद, यूरिया आदि के बिना सिर्फ गौ माता के गोबर और गौ मूत्र से खेती कर सकते हैं! जिससे उनके उत्पादन का खर्च लगभग शून्य होगा और उनकी आय में बहुत बढ़ोतरी होगी। आज किसान १५ - १५ हजार रुपए लीटर कीटनाश्क खेत में छिड़क रहा है, टनों टन महंगा यूरिया, रासायनिक खाद खेत में डाल रहा है जिससे उसके उत्पादन का खर्चा बढता जा रहा है और उत्पादन भी कम होता जा रहा है। रासायनिक खाद वाले फल सब्जियाँ खाकर लाखों लाखों लोग प्रतिदिन बीमार हो रहे हैं। राजीव भाई ने गरीब किसानो को गाय ना बेचने की सलाह दी और उसके

गोबर और गौ मूत्र से खेती करने के सूत्र बताये। किसानो ने राजीव भाई के बताये हुए देशी खेती के सूत्रों द्वारा खेती करना शुरू किया और उनकी आर्थिक समृद्धि बहुत बढी।

१९९८ में राजीव भाई ने कुछ गौ समितियों के साथ मिलकर गौ ह्त्या रोकने के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में मुकदमा कर दिया और कहा कि गौ ह्त्या नहीं होनी चाहिए। सामने बैठे कुरेशी कसाइयों ने कहा क्यों नहीं होनी चाहिए उन्हे कोर्ट में ये साबित करना था कि गाय की ह्त्या कर माँस बेचने से ज्यादा लाभ है उसे बचाने में। कसाइयों की तरफ से लड़ने वाले भारत के सभी बड़े - बड़े वकील जो ५० - ५० लाख तक फीस लेते हैं, सभी बड़े वकील कसाइयों के पक्ष में और इधर राजीव भाई के पास कोई बड़ा वकील नही था क्योंकि इतना पैसा नहीं था, तो इन लोगों ने अपना मुकदमा खुद ही लड़ा और २००५ में मुकदमा राजीव भाई और उनके कार्यकर्ताओं ने जीत लिया। राजीव भाई ने अदालत में गाय के एक किलो गोबर से ३३ किलो खाद तैयार करने का फॉर्मूला बताया और अदालत के सामने करके भी दिखाया जिससे रोज की १८०० से २००० रुपए की कमाई की जा सकती है, ऐसे ही उन्होनें गौ मूत्र से बनने वाली औषधियों का आर्थिक मूल्यांकन भी करके बताया और तो और उन्होने सुप्रीम कोर्ट के जज की गाड़ी गोबर गैस से चलाकर दिखा दी! जज ने तीन महीने गाड़ी चलाई और ये सब देख उसने दाँतों तले उंगली दबा ली। राजीव भाई ने आयुर्वेद का गहन अध्ययन किया और ३५०० वर्ष पूर्व महाऋषि चरक के शिष्य वागभट्ट जी को महीनो महीनो तक पढा और बहुत ज्ञान अर्जित किया और फिर घूम घूम कर लोगों को आयुर्वेदिक चिकित्सा के बारे में बताना शुरू किया कि कैसे बिना दवा खाये आयुर्वेद के कुछ नियमों का पालन कर हम सब बिना डॉक्टर के स्वस्थ रह सकते हैं और स्वस्थ जीवन जी सकते हैं, इसके अलावा हर व्यक्ति अपने शरीर की ८५ प्रतिशत चिकित्सा स्वयं कर सकता है। राजीव भाई खुद इन नियमों का पालन १५ वर्ष से लगातार कर रहे थे जिस कारण वे पूर्ण स्वस्थ थे १५ वर्ष तक किसी डॉक्टर के पास नही गए थे, वो आयुर्वेद के इतने बडे ज्ञाता हो गए थे कि लोगों की गंभीर से गंभीर बीमारियाँ जैसे शुगर, बीपी,

दमा, अस्थमा, हार्ट ब्लोकेज, कोलेस्ट्रोल आदि का इलाज करने लगे थे और लोगों को सबसे पहले बीमारी होने का असली कारण समझाते थे और फिर उसका समाधान बताते थे, लोग उनके हेल्थ के लेक्चर सुनने के लिए दीवाने हो गए थे इसके इलावा वो होम्योपैथी चिकित्सा के भी बडे ज्ञाता थे। भारत स्वाभिमान के लक्ष्य और प्रचार के लिए वे हरिद्वार से पूरे भारत की यात्रा करने लगे। लगभग आधे भारत की यात्रा पूरी हो चुकी थी। जब वे उड़ीसा से छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले में पहुंचे वहाँ उन्होने २ जन सभाओ को आयोजित किया। इसके पश्चात अगले दिन २७ नवंबर २०१० को जांजगीर जिले में दो विशाल जन सभाएँ की, इसी प्रकार २८ नवंबर को बिलासपुर जिले में व्याख्यान देने से पश्चात २९ नवंबर २०१० को छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले मे पहुंचे। उनके साथ छतीसगढ के राज्य प्रभारी दया सागर और कुछ अन्य लोग साथ थे। दुर्ग जिले में उनकी दो विशाल जन सभायें आयोजित थी पहली जनसभा तहसील बेमतरा मे सुबह १० बजे से दोपहर १ बजे तक थी, राजीव भाई ने विशाल जन सभा को आयोजित किया। इसके बाद का कार्यक्रम शाम ४ बजे दुर्ग में था, जिसके लिए वह दोपहर २ बजे बेमेतरा तहसील से रवाना हुए (इसके बात की घटना विश्वास योग्य नही है ये उस समय उपस्थित छतीसगढ के प्रभारी दयासागर और कुछ अन्य साथियो द्वारा बताई गई है) उन लोगों का कहना था कि गाड़ी में बैठने के बाद उनका शरीर पसीना पसीना हो गया, दयासागर ने राजीव जी से पूछा तो जवाब मिला कि मुझे थोडी गैस सीने में चढ गई है शोचालय जाऊँ तो ठीक हो जाऊंगा। फिर दयासागर तुरंत उनको दुर्ग के अपने आश्रम में ले गए वहाँ राजीव भाई शौचालय गए और जब कुछ देर बाद बाहर नहीं आए तो दयासागर ने उनको आवाज दी, राजीव भाई ने दबी दबी आवाज में कहा गाड़ी स्टार्ट करो मैं निकल रहा हूँ ! जब काफी देर बाद राजीव भाई बाहर नही आए तो दरवाजा खोला गया, राजीव भाई पसीने से लथपत होकर नीचे गिरे हुए थे ! उनको बिस्तर पर लिटाया गया और पानी छिड़का गया दयासागर ने उनको अस्पताल चलने को कहा, राजीव भाई ने मना कर दिया उन्होने कहा होम्योपैथी डॉक्टर को दिखाएंगे। थोडी देर बाद होम्योपैथी डॉक्टर ने आकर उनको दवाइयाँ दी, फिर भी आराम ना मिलने पर

उनको भिलाई के सेक्टर ९ में इस्पात संयंत्र अस्पताल में भर्ती किया गया। इस अस्पताल मे अच्छी सुविधायें ना होने के कारण उनको अपोलो बी. एस. आर. अस्पताल में भर्ती कराया गया। राजीव भाई एलोपेथी चिकित्सा लेने से मना करते रहे।

उनका संकल्प इतना मजबूत था कि वो अस्पताल मे भर्ती नही होना चाहते थे, उनका कहना था कि सारी जिंदगी एलोपेथी चिकित्सा नही ली तो अब कैसे ले लूँ? ऐसा कहा जाता है कि इसी समय बाबा रामदेव ने उनसे फोन पर बात की और उनको आईसीयु मे भर्ती होने को कहा। फिर राजीव भाई को ५ डॉक्टरों की टीम के निरीक्षण में आईसीयु में भर्ती करवाया गया, उनकी अवस्था और भी गंभीर होती गई और रात्रि एक से दो के बीच डॉक्टरों ने उन्हे मृत घोषित किया। (बेमेतरा तहसील से रवाना होने के बाद की ये सारी घटना राज्य प्रभारी दयासागर और अन्य अधिकारियों द्वारा बताई गई है) राजीव जी की मृत्यु का कारण दिल का दौरा बता कर सब तरफ प्रचारित किया गया। इस बात का पता आज तक नही चल पाया कि जिन्हे आयुर्वेद का इतना ज्ञान था और जो पूरी तरह स्वस्थ थे उन्हें दिल का दौरा कैसे पड़ा। ३० नवंबर को उनके मृत शरीर को पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार लाया गया जहां हजारों की संख्या में लोग उनके अंतिम दर्शन के लिए पहुंचे और 1 दिसंबर को राजीव जी का दाह संस्कार कनखल हरिद्वार में किया गया। राजीव भाई के चाहने वालों का कहना है कि अंतिम समय में उनका चेहरा पूरा काला पड गया था, उन्होंने बार - बार उनका पोस्टमार्टम करवाने का आग्रह किया लेकिन पोस्टमार्ट्म नही करवाया गया।

श्री राजीव दीक्षित जी के व्याख्यान

फोटो - श्री राजीव दीक्षित उनके गुरु प्रोफेसर श्री धर्मपाल जी के साथ

श्री राजीव दीक्षित जी के व्याख्यानों को कोई एक बार सुन लेता था, तो वो हमेशा राजीव जी का चाहने वाला बन जाता था, उनकी वाणी में बड़ा बल था। कई लोगों का जीवन बदल देने की ताकत थी। उन्होंने अपने जीवन में ५००० से ज्यादा व्याख्यान दिए। दुर्भाग्य से सभी उपलब्ध नही है। सिर्फ १५५ ही है। इन व्याख्यानों में हज़ारों ऐसी चीजें हैं जो अगर राजीव भाई नही होते तो हमे कभी भी पता नही चलती। इन्हे ध्यान से सुनिए, डाउनलोड करिये और अपने जीवन में अमल करने की, उतारने की कोशिश करें और लोगों तक भी पहुचायें। उनके द्वारा दिए गए कुछ अनमोल व्याख्यानों की सूची निम्नलिखित है, इन बहुमूल्य व्याख्यानों को सुनने या डाउनलोड करने के लिए उनके नाम पर क्लिक करें और इनके बारे में ज्यादा से ज्यादा लोगों को बताएँ -

१. अभी भी भारत पहले की तरह गुलाम है - मुंबई।

२. एक कार्यकर्ता के नियम।

३. कोक पेप्सी का सच।

४. अमेरिका का भारत पर आर्थिक प्रतिबंध - थाने।

५. आंदोलन का मीडिया कैसा होगा?

६. अंग्रेज चले गए, लेकिन अँग्रेजियत नही।

७. आजादी का असली इतिहास।

८. आजादी के बाद भी चल रहा लॉर्ड मैकाले का इंडियन एजुकेशन सिस्टम।

९. आजादी के बाद भी गुलामी की निशानियाँ - १

१०. आजादी के बाद भी गुलामी की निशानियाँ - २

११. आज़ादी के बाद स्वदेशी अपनाने की जरुरत।

१२. आजादी नही ये धोखा है।

१३. आजादी से पहले स्वदेशी आंदोलन की लड़ाई।

१४. आपका मांसाहारी खाना: ग्लोबल वार्मिंग का सबसे बड़ा कारण।

१५. आर्थिक गुलामी में धँसता हुआ भारत।

१६. अर्थव्यवस्था के बर्बाद होने का कारण और निवारण।

१७. अंग्रेजी भाषा की गुलामी।

१८. अंग्रेजी कानून व्यवस्था।

१९. अंतराष्ट्रीय संधियों में फँसता भारत।

२०. एंटी हिन्दू इन. जी. ओ. अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति एक्सपोज्ड।

२१. अर्थव्यस्था में मंदी के कारण और निवारण।

२२. आयुर्वेद, शेंद्रिय खेती, काला धन - रतलाम।

२३. आयुर्वेद और राष्ट्रीय समस्याएँ - विलासपुर।

२४. आयुर्वेद और एलोपेथी - तुलनात्मक अध्ययन।

२५. आयुर्वेदिक चिकित्सा।

२६. आयुर्वेदिक चिकित्सा - धमतरी, छत्तीसगढ़।

२७. श्रीराम कथा में भारत की समस्याओं का समाधान - १

२८. श्रीराम कथा में भारत की समस्याओं का समाधान - २

२९. भारत आजाद या गुलाम - सारनी।

३०. भारत और यूरोप की सभ्यता और संस्कृति - कोटा।

३१. भारत और यूरोप, विज्ञान और तकनीक।

३२. भारत और यूरोप की संस्कृति - भीलवाड़ा।

३३. भारत देश की व्यथा - हिसार।

३४. भारत कैसा है और कैसा बनाना है।

३५. भारत का स्वर्णिम अतीत।

३६. भारत का सांस्कृतिक पतन कैसे हुआ।

३७. भारत के किसानों के लिए शेंद्रिय खेती का फॉर्मूला।

३८. भारत के किसानों की गुलामी और खेती।

३९. भारत के परमाणु बम से दूसरे देशों को तकलीफ।

४०. भारत की ऐतिहासिक भूलें जो हमें दोबारा नही करनी चाहिए।

४१. भारत की दुनिया को देन।

४२. अंग्रेजों द्वारा भारत के लिए बनाई गई कानून और शिक्षा व्यवस्था - पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार।

४३. भारत की कथा - उड़ीसा।

४४. भारत की खेती - बेलगाउम।

४५. भारत की लूट और अंग्रेजी कानून - लातूर, महाराष्ट्र।

४६. भारत की मान्यताएँ और उसके खिलाफ चल रहे अंग्रेजी कानून।

४७. भारत की संस्कृति और सभ्यताएँ कैसे खत्म हो रही है।

४८. भारत को आजादी मिली, लेकिन स्वतंत्रता नही - बैतूल।

४९. भारत में आतंकवाद और उसका निवारण।

५०. भारत में हुई पहली क्रांति (१८५७) की कहानी।

५१. भारत में मौत का व्यापार।

५२. भारत में नई व्यवस्था लाने के लिए हमारी लड़ाई।

५३. भारत में स्वराज्य कैसे आएगा - कोल्हापुर, महाराष्ट्र।

५४. भारत में स्वाइन फ्लू के पीछे का सच।

५५. भारत में विदेशी कंपनियों की लूट।

५६. भारत पाकिस्तान, कारगिल युद्ध और अमेरिका।

५७. भारत स्वदेशी के रास्ते से ही स्वावलम्बी बनेगा।

५८. भारत: तब और अब - उज्जैन।

५९. भारतियों की मानसिक गुलामी।

६०. काला धन - गुजरात।

६१. भारत में प्रतिभा पलायन - पुणे।

६२. देश की आर्थिक समस्याएँ (चार्टर्ड अकाउंटेंट सभा)

६३. सभी पेय पदार्थ - कोक, पेप्सी, लिम्का, फेंटा, ड्यू के बारे में पोल खोली।

६४. सी. टी. बी. टी. की संधि के पीछे का रहस्य।

६५. दातून या टूथपेस्ट।

६६. दुनिया के दूसरे देशों में क्रांति।

६७. भारत स्वाभिमान आंदोलन के समय।

६८. इंग्लैंड की महारानी एलिज़ाबेथ की भारत यात्रा।

६९. स्वदेशी से स्वावलम्बी भारत।

७०. परिवार नियोजन कैसे करें?

७१. भाजपा सरकार के समय बीमा क्षेत्र में विदेशी निवेश।

७२. गर्भपात, एक पाप।

७३. जी. ए. टी. टी. (GATT) समझौते का पूरा सच।

७४. गेट समझौता।

७५. गाय: कृषि और धर्म।

७६. गौहत्या और उसे रोकने के उपाय।

७७. गौहत्या, राजनीति और सुप्रीम कोर्ट में संघर्ष।

७८. भारत में गौहत्या का इतिहास।

७९. ग्लोबलाइजेशन, कृषि, बैंकिंग क्षेत्र का विश्लेषण - गुलबर्गा, जनवरी २००५

८०. सोने, चांदी के गहनों पर हॉलमार्क - एक साज़िश।

८१. ग्लोबलाइजेशन और भारतीय अर्थव्यवस्था की तबाही।

८२. गौरक्षा और उसका महत्त्व।

८३. स्वास्थ्य कथा, आयुर्वेद और होमियोपैथी - पटियाला

८४. स्वास्थ्य कथा - महाराष्ट्र।

८५. स्वास्थ्य कथा : भारत और यूरोप - भीलवाड़ा।

८६. संपूर्ण स्वास्थ्य कथा - पुणे।

८७. संपूर्ण स्वास्थ्य कथा - चेन्नई।

८८. स्वास्थ्य कथा और आयुर्वेदिक नियम पालन।

८९. स्वास्थ्य कथा (विद्यार्थियों की सभा) - महाराष्ट्र।

९०. सिगरेट, गुटखा, तंबाकू छोड़ने के उपाय।

९१. नाड़ी परीक्षण से रोगों का पता कैसे लगाएँ?

९२. भिन्न रोगों के लिए स्वास्थ्य कथा।

९३. हिंदी भाषा का महत्व - हैदराबाद।

९४. कार्यकर्ता अपने कार्यों को कैसे करें - जोधपुर।

९५. टीवी चैनल और विज्ञापनों का षड़यंत्र।

९६. विदेशी कंपनियों के विरुद्ध संघर्ष कैसे करें?

९७. भारत की भू - संपदा की लूट।

९८. भारतीय इतिहास के अनकहे पहलू - दुबई।

९९. भारत और पश्चिम की संस्कृति।

१००. अतिरिक्त आयोडीन युक्त नमक का सत्य।

१०१. जन गन मन या वंदे मातरम?

१०२. जैविक खेती करने के सूत्र।

१०३. जीवन जीने की कला।

१०४. बच्चों को कैसी शिक्षा दी जाए?

१०५. कार्यकर्ताओं को क्या करना होगा - गोआ।

१०६. कश्मीर की समस्या और समाधान - कश्मीर।

१०७. क्रांति होने के ऐतिहासिक उदाहरण।

१०८. भारत स्वाभिमान आंदोलन के दौरान - आँध्रप्रदेश।

१०९. भारत स्वाभिमान आंदोलन के दौरान - भटिंडा, पंजाब।

११०. भारत स्वाभिमान आंदोलन के दौरान - छत्तीसगढ़।

१११. भारत स्वाभिमान आंदोलन के दौरान - भोपाल।

११२. भारत स्वाभिमान आंदोलन के दौरान - राजगढ़।

११३. भारत स्वाभिमान आंदोलन के दौरान - गोआ।

११४. भारत स्वाभिमान आंदोलन के दौरान - बिलासपुर।

११५. भारत स्वाभिमान आंदोलन के दौरान - कलकत्ता।

११६. भारत स्वाभिमान आंदोलन के दौरान - दिल्ली।

११७. भारत स्वाभिमान आंदोलन के दौरान - देवास।

११८. भारत स्वाभिमान आंदोलन के दौरान - जांजगीर।

११९. भारत स्वाभिमान आंदोलन के दौरान - मदुरै।

१२०. भारत स्वाभिमान आंदोलन के दौरान - मुंगेली।

१२१. भारत स्वाभिमान आंदोलन के दौरान - पिपरिया।

१२२. भारत स्वाभिमान आंदोलन के दौरान - पोंडा, गोआ।

१२३. भारत स्वाभिमान आंदोलन के दौरान - रायगढ़।

१२४. भारत स्वाभिमान आंदोलन के दौरान - छत्तीसगढ़।

१२५. भारत स्वाभिमान आंदोलन के दौरान - शिवपुरी।

१२६. भारत स्वाभिमान आंदोलन के दौरान - सोनकच्छ।

१२७. भारत स्वाभिमान आंदोलन के दौरान - उधमपुर।

१२८. अंग्रेज मैकाले का भारत के शिक्षा तंत्र को ख़त्म करना।

१२९. महात्मा गाँधी को श्रद्धांजलि सन्देश।

१३०. महिलाओं को मासिक धर्म की तकलीफ का निवारण।

१३१. पश्चिम का मानस।

१३२. पाखंडी संतों का सत्य।

१३३. पेटेंट कानून और दवा कंपनियों की लूट।

१३४. संघटन के सिद्धांत और मर्यादा।

१३५. शहीदों के सपनों का भारत - ग्वालियर।

१३६. शहीदों के सपनों का भारत - हिमाचल प्रदेश।

१३७. SEZ - स्पेशल इकोनॉमिक ज़ोन्स या भारत की गुलामी।

१३८. विद्यार्थियों के बीच सभा।

१३९. विद्यार्थियों के बीच सभा - चंडीगढ़।

१४०. स्वदेशी आंदोलन में गणेश उत्सव का महत्व।

१४१. हमारा पशुधन और शाकाहार - जैन समाज सभा।

१४२. VAT और हमारी TAX व्यस्वस्था।

१४३. विदेशी कंपनियों की लूट - अन्य।

१४४. विदेशी विज्ञापनों का झूट।

१४५. विज्ञापनों का बाल मन पर प्रभाव।

१४६. विष - मुक्त खेती और समृद्ध किसान।

१४७. WTO समझौते का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव।

१४८. WTO समझौते और VAT कानून पर प्रश्न उत्तर।

१४९. WTO समझौता और भारत की वर्तमान समस्याएँ।

१५०. WTO समझौते का सोने के व्यापारियों पर प्रभाव।

१५१. WTO समझौते का स्वास्थ्य क्षेत्र पर प्रभाव।

१५२. WTO समझौते का सेवा के क्षेत्र पर प्रभाव।

१५३. WTO समझौता और VAT कानून (रायपुर)

१५४. WTO समझौता और भारतीय अर्थव्यवस्था।

१५५. युवाओं का मार्गदर्शन।

श्री राजीव दीक्षित जी की किताबें

१. निरोगी रहने के नियम और गंभीर रोगों की घरेलू चिकित्सा।

२. बागभट्ट संहिता पर आधारित स्वदेशी चिकित्सा।

३. सौन्दर्य निखार (नेचुरल ब्यूटी टिप्स)

४. प्रभावशाली अहिंसक चिकित्सा पद्धतियाँ।

५. गौ चिकित्सा - गौ मूत्र एवं अन्य औषधियों से स्वदेशी चिकित्सा।

६. यूरोप की प्राइवेट लाइफ (भारत और यूरोप की सभ्यता - संस्कृति)

७. हम कितने शाकाहारी हैं?

८. आज भी खरे हैं तालाब!

९. भारत में मौत का व्यापार - ट्रेड ऑफ़ डेथ इन इंडिया!

१०. बहुराष्ट्रीय कंपनियो के मकड़जाल मे फँसा भारत!

१२. पेप्सी - कोला, की असलियत! रियलिटी ऑफ़ पेप्सी कोक।

१३. WTO समझौता क्या है और इससे भारतीय अर्थव्यवस्था को को नुकसान।

१४. आरोग्य आपका!

१५. भारत की परंपरा में असहयोग (लेखक श्री धर्मपाल जी - राजीव जी के गुरु)

१६. गांधी को समझें (लेखक धर्मपाल जी - राजीव भाई के गुरु)

१७. भारत की लूट और बदनामी (लेखक धर्मपाल जी - राजीव भाई के गुरु)

१८. सत्रहवीं शताब्दी में भारत मे विज्ञान और तंत्र ज्ञान (लेखक धर्मपाल जी - राजीव भाई के गुरु)

१९. पंचायती राज और भारतीय राजनीतिक तंत्र (लेखक धर्मपाल जी - राजीव भाई के गुरु)

२०. भारत का चित मानस और काल (लेखक धर्मपाल जी - राजीव भाई के गुरु)

२१. जीरो बजट खेती और किसान पर असर।

श्री राजीव दीक्षित जी के अनमोल विचार

“केवल स्वदेशी नीतियों से ही देश फिर से सोने की चिड़िया बन सकता है।”

“जब भारत में कोई विदेशी कंपनी नहीं थी, तब भारत सोने की चिड़िया था।”

“यह जानवर नहीं, जान है, गाय बचेगी तो भारत बचेगा।”

“जब परिवर्तन होता है तो शुरु में किसी को भरोसा नहीं होता, लेकिन बाद में वो हो जाता है।”

“अंग्रेजों ने जो कानून इस देश को लूटने और बर्बाद करने के लिए बनाये थे, वो आज भी चल रहे हैं, तो मैं कैसे मान लूँ कि ये देश आजाद हो गया है?”

“मेरा हो मन स्वदेशी, मेरा हो तन स्वदेशी, मर जाऊँ तो भी मेरा, होवे कफ़न स्वदेशी।”

“कोई भी देश अपनी गुलामी की निशानियों को सहेज कर नहीं रखता।”

“इस देश में क्रांति होगी तो पार्लियामेंट के बाहर होगी।”

“भारत के किसानों को समृद्धशाली बनाने का एकमात्र उपाय स्वदेशी एवं विषमुक्त खेती है।”

“अंतर्राष्ट्रीय संधियों के मकड़जाल में फँसाकर भारत को पुनः गुलाम बनाने की साजिश जारी है।”

“देश को सोने की चिड़िया नहीं शेर बनाना है, गोरे अंग्रेजों से तो बचा लिया, अब काले अंग्रेजों से बचाना है।”

“मैं उन्ही लोगों को गुलामी की मानसिकता से आजाद करवा सकता हूँ, जो अपने आप को गुलाम समझते हों।”

“विदेशी भाषा में संकल्प नहीं लिए जाते क्यूंकि विदेशी भाषा में लिए संकल्प कभी पूरे नहीं होते।”

“दुनिया में अगर कोई व्यक्ति बेसिक रिसर्च करना चाहे, वो तब तक संभव नहीं है जब तक मातृभाषा में चिंतन न करे।”

“हिंदी! सवाल सिर्फ भाषा का नहीं है, सवाल अपने राष्ट्र के सम्मान का है, स्वाभिमान का है।”

“भारत की मुर्ख सरकारें आज तक भी अंग्रेजों के बनाये गए कानूनों को बदल नहीं पाई।”

“अंग्रेजों ने भारत को लूटने के लिए 34735 कानून बनाए थे जो आज भी चल रहे हैं और यही कारण है कि भारत आज भी भ्रष्टाचार, भुखमरी, गरीबी और बेकारी का शिकार है।”

“भारत को अंग्रेजों के कानून रद्द करके भारत की व्यवस्थाओं और अपने देश के अनुसार कानून बनाने चाहिए।”

“15 अगस्त 1947 को सिर्फ कानून के आधार पर सत्ता का हस्तांतरण हुआ था, स्वतंत्रता नहीं आई थी, स्वतंत्रता का मतलब होता है अपने द्वारा बनाये गए तंत्र में जीना, ना कि विदेशी तंत्र में, लेकिन 15 अगस्त 1947 के बाद कोई भी अपना तंत्र नहीं बना।”

“अंग्रेजों ने India Independance Act के तहत देश सौंपा था।”

“अंग्रेजों के बनाए गए कानूनों के आधार पर हमें कभी न्याय नहीं मिलेगा।”

“भारत का संविधान अंग्रेजों का बनाया हुआ Governament Of India Act 1935 है जो भारत के लोगों के साथ धोखा है।”

“भारत सरकार कृषि पर ध्यान नहीं देती इसलिए किसानों की हालत खराब है और वो आत्महत्या कर रहे हैं।”

“ITC कंपनी हर साल सिगरेट बनाने के लिए 14 लाख पेड़ काटती है और सरकार ने इसे खुली छूट दे रखी है।”

“गाय हजारों गंभीर रोगों को ठीक करती है और देश की अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत जरूरी है।”

“कॉमनवेल्थ वो खेल है जो दुनिया के 71 देश अपनी ग़ुलामी को याद करने के लिए हर 4 साल में खेलते हैं।”

“अंग्रेजों ने भारतीयों को जाति के नाम पर General, OBC, SC, ST में बाँटकर तोडा।”

“इस देश में बहुराष्ट्रीय (Multinational) कंपनियों के खिलाफ अगर कोई आंदोलन खड़ा हो और अगर उसमे मेरी जान चली जाती है तो मुझे लगेगा कि मेरा जीवन सार्थक हो गया।”

“देश के लिए वही व्यक्ति संकल्प ले सकता है जिसकी आत्मशक्ति मजबूत हो।”

“अगर आप कोई संकल्प लेना चाहते हैं तो व्यसन(नशा) बंद कर दीजिए क्यूँकि नशे से व्यक्ति की आत्मा कमजोर होती है और व्यक्ति संकल्पहीन हो जाता है।”

“कोई भी सभ्य देश अपने नागरिकों को विदेशी भाषा में शिक्षा, न्याय और व्यवस्था नहीं देता।”

“इस देश में राजनितिक पार्टियाँ लुटेरों के संगठित गिरोह हैं।”

“हर राजनितिक पार्टी देश को लूटती है, एक नागनाथ है तो दूसरी साँपनाथ।”

“हम हर 5 साल बाद सिर्फ कार का ड्राइवर बदल रहे हैं, कार वही है जो अंग्रेज देकर गए थे।”

“हम 1857 की क्रांति के भटके हुए क्रांतिकारी हैं, जब तक स्वदेशी भारत नहीं बनता, हम बार - बार जन्म लेंगे और बार - बार क्रांति करेंगे।”

“चाय हमारी आदत, क्रिकेट हमारा जूनून, आज भी चल रहे हैं अंग्रेजों के काले कानून।”

“अंग्रेजों के आने से पहले भारत के घरों में सोने के सिक्कों का ढेर ऐसे रहता था जैसे गेहूँ और चने का ढेर रहता है।”

“पहले हमारे गाँव पूर्ण रूप से स्वाबलंबी हुआ करते थे और नगर गाँव पर आधारित थे।”

“कोई भी काम दुनिया में असंभव नहीं होता, करने वाले व्यक्ति का संकल्प कितना बड़ा है, महत्व इस बात का होता है।”

“व्यवस्था-परिवर्तन के लिए सत्ता परिवर्तन जरूरी है।”

“संगठन अगर पूर्ण अनुशासन से चले तभी सफलता हासिल करता है।”

“सिकंदर भारत से जीतकर नहीं घायल होकर लौटा था, उसके सेनापति सेल्युकस को अपनी बेटी चन्द्रगुप्त मौर्य को देकर जानी पड़ी थी तो जो जीता वो सिकंदर क्यूँ, चन्द्रगुप्त मौर्य क्यूँ नहीं?”

“स्वदेशी एक ऐसा गहरा दर्शन है जो किसी भी देश को अपने पैरों पर खड़ा कर सकता है।”

“अगर आप विदेशियों पर निर्भर हैं, प्राबलम्बी हैं, तो आप दुनिया में कोई ताकत हासिल नहीं कर सकते।”

“जितने महापुरुष इस देश में हुए हैं, व्यवस्था परिवर्तन के लिए हुए हैं, सत्ता परिवर्तन के लिए नहीं।”

“हिंदुस्तान दुनिया में पहला ऐसा देश है जहाँ पर झूठे विज्ञापन करने की खुली छूट है।”

“भारत देश की आजादी के लिए 6 लाख 32 हजार क्रांतिकारी शहीद हुए, इनमें भगतसिंह सर्वोच्च शिखर पर हैं, ऐसा पूरा देश मानता है।”

“आज विदेशी कंपनियों की लूट बंद करने का एक ही आसान उपाय है विदेशी वस्तुओं का त्याग।”

“देश के राज नेताओं की भूल आज देश भुगत रहा है।”

“भोजन हमेशा सुखआसन में बैठकर करें और ध्यान खाने पर ही रहे, मतलब टेलीविजन देखते हुए, गाने सुनते हुए, पढ़ते हुए, बातचीत करते हुए कभी भी भोजन न करें।”

“हमारी बहुत सी धार्मिक किताबें, शास्त्र और इतिहास के साथ अंग्रेजों ने बहुत बड़ी छेड़खानी की है।”

“मैं भारत की भारतीयता के मान्यता के आधार पर फिर से खड़ा करना चाहता हूँ उस काम में लगा हुआ हूँ।”

“जब भारत में कोई विदेशी कम्पनी नही थी तब भारत सोने की चिड़िया था।”

समापन

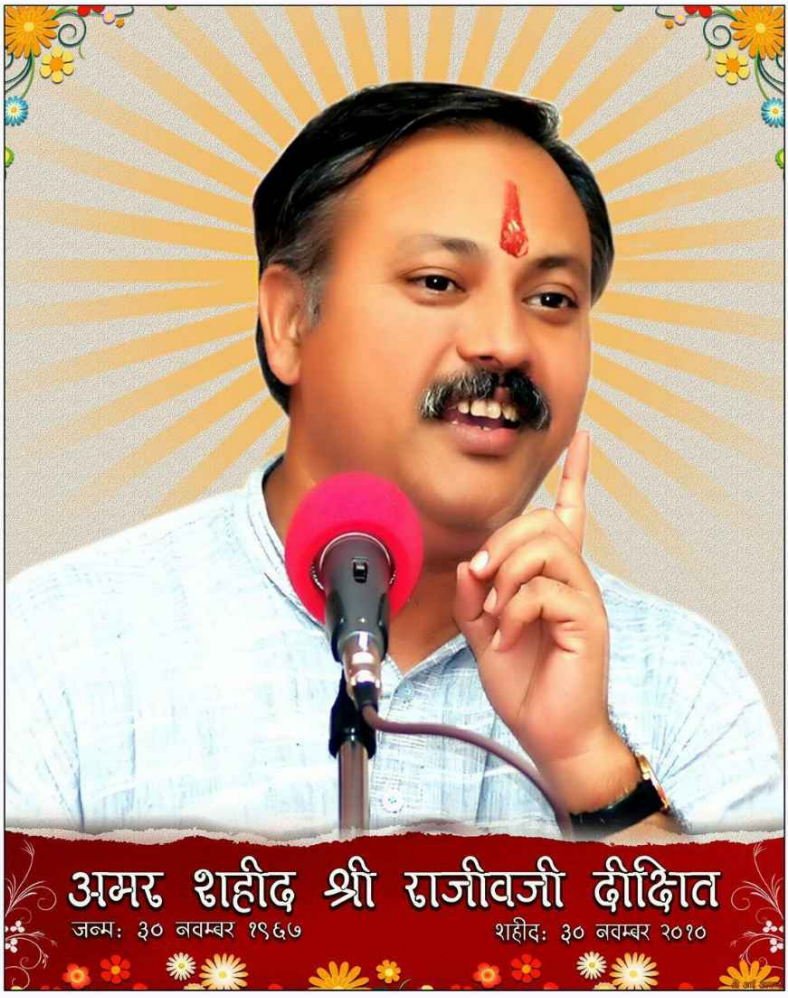

राजीव भाई की मृत्यु लगभग भारत के प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी की मौत से मिलती जुलती है आप सबको याद होगा ताशकंद से जब शास्त्री जी का मृत शरीर लाया गया था तो उनके भी चेहरे का रंग नीला, काला पड गया था और अन्य लोगो की तरह राजीव भाई भी ये मानते थे कि शास्त्री जी को विष दिया गया था, राजीव भाई और शास्त्री जी की मृत्यु में एक जो समानता है कि दोनों का पोस्टमार्टम नही हुआ था। उन्होंने बहुराष्ट्रीय कंपनियों के नाक में दम कर रखा था, तो इसकी भरपूर सम्भावना है कि इन्ही लोगों ने ऐसा किया होगा। उनकी मृत्यु से सम्बंधित कुछ सवाल जिनका उत्तर नही मिला।

१. बिना पोस्ट मार्टम किए हुए किसके आदेश पर ये प्रचारित किया गया कि राजीव भाई की मृत्यु दिल का दौरा पड़ने से हुई है?

२. २९ नवंबर को दोपहर २ बजे बेमेतरा से निकलने के पश्चात जब उनको गैस की समस्या हुई और रात २ बजे तक जब उनको मृत घोषित किया गया इसके बीच मे पूरे १२ घंटे का समय था, इन १२ घंटे में सामान्य सी समस्या गैस का समाधान कैसे नही हो पाया?

३. आखिर पोस्ट मार्टम करवाने में किसे तकलीफ थी?

४. राजीव भाई का फोन जो हमेशा ऑन रहता था वो २ बजे बाद बंद क्यों था?

५. राजीव भाई के पास एक थैला रहता था जिसमें वो हमेशा आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक दवाएँ रखते थे वो थैला खाली क्यों था?

६. ३० नवंबर को जब उनको पतंजलि योगपीठ में अंतिम दर्शन के लिए रखा गया था उनके मुंह और नाक से क्या टपक रहा था उनके सिर को माथे से लेकर पीछे तक काले रंग के पालिथीन से क्यूँ ढक रखा था?

७. और आखरी सवाल राजीव भाई का अंतिम विडियो जो आस्था चैनल पर दिखाया गया उसको एडिट कर चेहरे का रंग सफेद करके क्यों दिखाया गया, अगर किसी के मन को चोर नही था तो विडियो एडिट करने की क्या जरूरत थी?

वो हमेशा कहते थे कि "मै भारत को भारतीयता की मान्यताओं के आधार पर फिर से खड़ा करना चाहता हूँ, इस काम में लगा हुआ हूँ और अगर ऐसा करते हुए मेरे प्राण भी चले जाये तो कोई दुःख नहीं होगा" हर बार यहां 'थे' का उपयोग करना पढ़ रहा है जो कि बहुत दुःख की बात है, लेकिन वो हमेशा कहा करते थे कि भारत वीरविहीन भूमि नही है, एक राजीव के जाने से कोई नुकसान नही होगा, बल्कि हजारों, लाखों राजीव दीक्षित उठ खड़े होंगे इस काम में, अब सवाल ये है कि क्या उनके सपनों के भारत को बनाने में हम कितने सफल होते हैं, क्या हमारा देश फिर से अपनी मान्यताओं के आधार पर खड़ा हो पायेगा? क्या ये देश फिर से सोने की चिड़िया बन पायेगा? इसमें हम सबके योगदान की जरुरत है। अब्दुल कलाम साहब ने कहा था अगर इस देश में क्रांति लाना है अगर इसे बदलना है, तो हम सबको मिलकर लड़ना होगा और देश को १६ वी, १७ वी शताब्दी की तरह श्रीमंत बनाना है,

समृद्ध बनाना है, तो हमे सबसे पहले हमारे घर से ही शुरुआत करना होगा.....

इस किताब को लिखने का उद्देश्य यही है कि जो सपना राजीव जी ने देखा था उसे हम लोग पूरा करें। हम अपने अपने स्तर पर और अपने परिवार से शुरुआत करें और इस बात का ध्यान रखें कि उनका संघर्ष व्यर्थ न जाये। इस उद्देश्य को अच्छी तरह से जानने, समझने के लिए उनके व्याख्यानों को सुने। अंत में एक बात - अगर हम उन्हें सच्चे मन से श्रद्धांजलि अर्पण करना चाहते हैं तो उनके सपनो का भारत बनाना ही उनके लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगा।

"स्वदेशी भारत, स्वावलंबी भारत, स्वस्थ भारत और स्वाभिमान के लिए प्राण न्यौक्षावर करने वाले राजीव भाई को शतः शतः नमन"